रोचक अंक

मैं विज्ञान प्रगति का विगत पांच वर्षों से नियमित पाठक हुँ और इसका प्रत्येक अंक मुझे बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगता है। आमुख कथा, विशेष लेख, नवीन-जानकारी, रोचक जानकारी और चित्रकथा ज्ञान के सागर होते हैं। सवाल जवाब एवं विज्ञान क्विज़ इसकी सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं।

राष्ट्रीय बाल दिवस पर विशेष विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2012 का अंक पढ़ा। इस अंक में प्रकाशित लेख 'आधुनिक भारत के अग्रदूत पं जवाहरलाल नेहरू' के माध्यम से नेहरू जी के जीवनकाल से जुड़ी अति महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुयीं। आज भारत विज्ञान के क्षेत्र में जो सफलता के नित नये आयाम छू रहा है, इसका श्रेय पण्डित जवाहरलाल नेहरू को ही जाता है। इसके अलावा मंजुलिका लक्ष्मी एवं प्रेमचंद्र श्रीवास्तव द्वारा महाविभूति के अंतर्गत प्रस्तुत लेख व श्री काली शंकर जी का विशेष लेख 'मंगल पर मंगल' ज्ञान कोष में वृद्धि करने में सहायक सिद्ध हुए। अंत में विज्ञान प्रगति एवं इसकी समस्त टीम को शत-शत नमन एवं नववर्ष 2013 की हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री विमल वर्मा, मोहल्ला दुर्गाप्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर, जिला-पीलीभीत 262201 (उ.प्र.)

हमारी प्रगति : विज्ञान प्रगति

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2012 का अंक हमेशा की तरह समसामयिक और नवीन ज्ञान से परिपूर्ण लगा। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी का मानना था कि 'विज्ञान ही एक मात्र वह साधन है जो भूख और गरीबी को मिटा सकता है।' आज 6 दशक बाद भी उनकी उसी दूरदृष्टि को विज्ञान प्रगति अपना ध्येय बनाये हुए है। विज्ञान की प्रगति से ही मानव की प्रगति जुड़ी है। अतः यह समसामयिक आवश्यकता है कि हम सब 'विज्ञान प्रगति' से जुड़ें। विज्ञान के जटिल नियमों को सरल भाषा में समझें, उन्हें अपने आसपास की घटनाओं में घटता हुआ देखें। विश्वास कीजिए कि ऐसा करने से हम सबमें एक लघु वैज्ञानिक जन्म लेने लगेगा। ऐसे समय में जब चहुँदिशि तकनीक का ही बोलबाला है, हमारी यही वैज्ञानिक सोच हमारी और हमारे देश की प्रगति सुनिश्चित करेगी।

श्री शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी, सुपुत्र श्री राकेश कुमार रस्तोगी, ग्राम व पोस्ट-रेउसा, तहसील-बिसवां, जिला-सीतापुर (उ.प्र.)
[मो. : 08376950699; 09956020165]

उपयोगी अंक

मैं विज्ञान प्रगति का एक नियमित पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका का प्रत्येक माह बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। मुझे नवम्बर 2012 का अंक अत्यन्त उपयोगी लगा। बाल-दिवस के अवसर पर पं. जवाहरलाल नेहरू के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। डॉ. बीरबल साहनी के बारे में भी इस अंक के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध हुयीं। विज्ञान प्रगति परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री हरि नारायण सिंह (शिक्षक), राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय बैकुण्ठपुर, गोपालगंज 841409 (बिहार)
[मो. : 09801229539]

मनमोहक पत्रिका

मैं एम.ए. द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ। मैं विज्ञान प्रगति का पिछले 10 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। इस समय मैं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूँ। मैं विज्ञान प्रगति पत्रिका का बेहद बेसब्री से हर माह इन्तजार करता हूँ। इससे मुझे प्रतियोगी परीक्षाओं में बहुत मदद मिलती है। मुझे लगता है कि विज्ञान प्रगति में ज्ञान-विज्ञान के समस्त अवयवों को ध्यान में रखकर ही इसके अंकों को प्रकाशित किया जाता है। मेरा आप से विनम्र निवेदन है कि जन्तु विज्ञान के बारे में बताने की कृपा करें। यह एक ज्ञानवर्धक और हर उम्र के लोगों के लिए उपयोगी पत्रिका है। यह पत्रिका हमारे जैसे अनेक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। विज्ञान क्विज़ हम लोगों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में बहुत महत्वपूर्ण साबित होता है। विज्ञान प्रगति ने अन्तरिक्ष के बारे में जो लेख छापा है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विज्ञान प्रगति देश की वर्तमान समस्याओं जैसे कृषि, पर्यावरण तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर लेख प्रकाशित कर रही है जिसके लिए मैं विज्ञान प्रगति टीम को धन्यवाद देता हूँ।

श्री देवव्रत उपाध्याय, ग्राम-उभाई, पो. भटावल, हरैया बस्ती 272135 (उ.प्र.) [मो. : 09794283911 ; 09918323351]

शानदार अंक

विज्ञान प्रगति का शानदार 700वां अंक प्राप्त हुआ। 700वें अंक में प्रवेश से पहले विज्ञान प्रगति ने निश्चित रूप से कई उतार-चढ़ाव देखे होंगे। 60 वर्ष व 700वां अंक विज्ञान प्रगति की कामयाबी बयां करता है। सम्पादकीय भावुक लगा। एक सफलतम पत्रिका के पीछे सुधी पाठकगण होते हैं किन्तु वह गुणवत्ता से भरपूर होनी चाहिये। क्योंकि आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है, इस प्रतिस्पर्धा के युग में पत्रिका द्वारा अपनी अहमियत बनाये रखना किसी मिसाल से कम नहीं है। संजय कुमार का आलेख 'जन-जन तक विज्ञान की संवाहिकी विज्ञान प्रगति' अच्छा लगा। वास्तव में विज्ञान प्रगति जन-जन की प्रिय पत्रिका बन गई है। जैसलमेर से ईटानगर तक इसके पाठक हैं।

'सुनीता विलियम्स : अन्तरिक्ष परी फिर उड़ पड़ी' बहुत अच्छा लगा। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि एक भारतीय मूल की महिला ने अन्तरिक्ष में दुबारा जाने का गौरव प्राप्त किया है। मगर दोस्तो, यह गौरव मूल भारतीयों को क्यों नहीं मिलता? प्रवासी भारतीय जब तरक्की करते हैं, तो हम उनका सम्बन्ध भारत से जोड़ देते हैं। आखिरकार भारत से प्रतिभाएं पलायन क्यों करती हैं?

प्रतिभाओं को ऐसे अवसर हमारे देश में क्यों नहीं मिलते हैं? यह एक बहस का विषय है। विज्ञान शिक्षण व

विज्ञान प्रगति : बाल दिवस पर विशेष

विज्ञान प्रगति का राष्ट्रीय बाल दिवस पर विशेष नवम्बर 2012 का अंक काफी अच्छा लगा। इस अंक की आमुख कथा आधुनिक भारत के अग्रदूत पं. जवाहरलाल नेहरू पसंद आयी। ओलम्पिक खेलों में रिकॉर्ड तोड़ सफलताओं का विज्ञान, खेल की दुनिया का मुश्किल सवाल : वह लड़का है या लड़की? मंगल पर मंगल, तथा नील-आर्मस्ट्रांग : पहला कदम और आखिरी दम लेखों ने मर्म को छू लिया। मैं पं. नेहरू के इस कथन का समर्थन करता हूँ कि 'विज्ञान ही एकमात्र वह साधन है जो भूख और गरीबी को मिटा सकता है।'

विज्ञान प्रगति के लेख प्रेरणादायक, प्रोत्साहित करने वाले, शिक्षाप्रद, रोचक, ज्ञानवर्धक तथा सच का सामना करने वाले होते हैं। विज्ञान प्रगति के लेख मात्र विज्ञान के छात्रों के लिए ही नहीं वरन साहित्य-कला के छात्रों के लिए भी उतने ही उपयोगी होते हैं जितना विज्ञान वर्ग के लिए। इसका कारण यह है कि जिस स्याही से साहित्य लिखा जाता है वह स्याही वैज्ञानिक पद्धति से तैयार की जाती है। जिस टाइप मशीन व कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर से साहित्य छापा जाता है या प्रिन्टिंग मशीन पर छपता है वह भी विज्ञान प्रगति की ही विषय-वस्तु है, विज्ञान की ही देन है।

खुशियों की यदि वैज्ञानिकता होती है तो आंसुओं के सैलाब की भी आधारिक संरचना विज्ञान ही है। सच तो यह है कि सारे सामाजिक-आर्थिक कार्य व राजनीतिक विचारधाराएं विज्ञान पर ही टिकी हुई हैं। दोनों का एक दूसरे से अटूट,अन्योन्याश्रित/गहरा सम्बन्ध है।

कविता

किसी रकीब ने नहीं, किसी इंसान ने नहीं
मुझे ज्ञान तो विज्ञान प्रगति ने दिया है।।
किसी नसीब ने नहीं, किसी मुकद्दर ने नहीं
विज्ञान का ज्ञान तो, विज्ञान प्रगति से लिया है।।
भाग्य ने नहीं, तन्त्र ने नहीं
सामान्य ज्ञान तो विज्ञान प्रगति ने दिया है।।
अस्त्र ने नहीं, शस्त्र ने नहीं
शिक्षा रूपी वस्त्र तो, विज्ञान प्रगति ने दिया है।
भावों ने नहीं, भावनाओं ने नहीं
आगे बढ़ने की ललक को विज्ञान प्रगति ने दिया है।
युगों तक अमर रहे, इसमें प्रकाशित सारे लेख।
सौरमंडल का इतिहास तो विज्ञान प्रगति में छपा है।।

श्री उमाशंकर मिश्र, ऑडिटर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, श्रम-मन्त्रालय, भारत सरकार, वाराणसी
[मो. : 08005303398]

डिजिटल माध्यमों द्वारा हिन्दी में विज्ञान संचार आलेख रोचक लगे। कुल मिलाकर यह अंक शानदार लगा।

श्री दिलावार हुसैन कादिरी, मो.-पोस्ट - मेहरों की ढाणी (मेहराबाद), तहसील-फतेहगढ़ (जैसलमेर) 345027 (राजस्थान) [मो.: 09929828772]

एक अद्भुत पत्रिका

मैं मैकेनिकल इंजीनियरिंग का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति का सितम्बर 2012 का रोचक अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में अनिता बाली का 'भविष्य का धन ज्ञान प्रबन्धन' काफी महत्वपूर्ण व ज्ञानमयी रहा। इसमें सूचना प्रौद्योगिकी के साधन, लाभ एवं हानियाँ (गूगल, इन्टरनेट, ई-मेल) आदि से सम्बन्धित विशेष लेख अत्यधिक पसंद आये। 'सुनीता विलियम्स : अंतरिक्ष परी फिर उड़ पड़ी' विशेष लेख में सुनीता विलियम्स का 'प्रीफ्लाइट साक्षात्कार' काफी रोचक लगा। अंतरिक्ष क्षेत्र से जुड़ी रोमांचकारी जानकारियों को पढ़कर हम बहुत उत्साहित हो जाते हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाले सवाल जब जब जवाव तब तब तो इस पत्रिका का ज्ञान पुँज हैं।

इस ज्ञानवर्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिये विज्ञान प्रगति टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद!

श्री ज्ञानेश कुमार, सुपुत्र श्री अमरचन्द्र, 2178, इन्द्रानगर, उरई, जिला - जलौन (उ.प्र.) [मो.: 08756703032 ई-मेल : gyanesh.kumar324@Gmail.com]

विज्ञान की अनूठी पत्रिका

भारत को आजादी मिले 60 वर्ष से भी ऊपर हो गए। उसी प्रकार हिन्दी मासिक विज्ञान प्रगति पत्रिका अपना 60वां वर्ष पूरा कर चुकी है। ऐसे में यह विज्ञान की पहली पत्रिका है जो इतनी सस्ती व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ज्ञान का भण्डार लिए अपनी उपस्थिति समाज के प्रत्येक वर्ग में दर्शाती है। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है कि यह पत्रिका वर्तमान, भविष्य व भूतकाल में घटित हुई व होने वाली घटनाओं से हमें अवगत कराती रही है।

अक्तूबर 2012 का विश्व खाद्य दिवस पर विशेष अंक पसंद आया। 'इक्कीसवीं सदी में धान' शीर्षक आलेख पढ़ने से यह ज्ञात हुआ कि भारत में धान की खेती का क्या मोल है। भारत में धान के प्रति अब तक क्या कुछ किया जा चुका है? यहाँ के अधिकांश लोग गांवों में बसते हैं जहां की मुख्य फसल धान व गेहूँ को माना जाता है। ऐसे में विज्ञान प्रगति ने धान की नई किस्म के बीज व उत्पादन को दर्शाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इस अंक से हमें कृषि सम्बंधित बातों की जानकारी मिली जो अपने आप में एक किसान के लिए ज्ञानवर्द्धक है। मृदा विज्ञान पर विज्ञान क्विज़ बहुत ही ज्ञानवर्द्धक रहा।

श्री सत्य प्रकाश, चित्रगुप्त सेवा समिति, ग्राम-बरवां, पो.- मीरगंज, जिला-गोपालगंज 841438 [मो.: 09471040259; 09661609850]

शोधपरक पत्रिका

विज्ञान प्रगति की अक्तूबर 2012 की आमुख कथा पसंद आयी। विशेष लेख 'भूख की बात हाथ दर हाथ' में यह जानकर बहुत दुख हुआ कि इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने के बावजूद भी अनगिनत लोग भूखे पेट सोते हैं। धन्य हो प्रो. नार्मन बोरलॉग साहब, जिन्होंने गेंहू की बौनी किस्म बतौर परीक्षण भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं हरित क्रान्ति के सूत्रधार डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को दी, जिससे आज हम अपनी आवश्यकता से अधिक गेंहू उत्पन्न करने लगे हैं। आज हमारे कृषि वैज्ञानिक इतने अधिक सक्षम हो गये हैं कि वे गेंहू के जीन में परिवर्तन कर उन्हें वैश्विक बीमारियों से लड़ने में सक्षम बना रहे हैं जैसे आज रतौंधी से लड़ने के लिये वैज्ञानिकों ने धान के जीन में बीटा कैरोटीन डाल दिया जो शरीर में पहुँच कर विटामिन ए बनायेगा और इससे रतौंधी नामक रोग से छुटकारा मिलेगा। अन्त में विजय कुमार उपाध्याय जी द्वारा प्रस्तुत विज्ञान समाचार और देवकी नन्दन जी द्वारा रचित सवाल जबाब बहुत ही अच्छे लगे। मेरा संपादक जी से यह निवेदन है कि पत्रिका में अन्तरिक्ष से सम्बन्धित लेखों को जरूर सम्मलित करते रहें।

अन्त में मैं सभी लेखकों का आभारी हूँ जो हमें नवीन ज्ञान से परिचित कराते हैं।

श्री महीपत यादव, ग्राम-पोस्ट जैतपुर, मु. घुसयाना, जिला - महोबा (उ.प्र.) [मो. : 08400712609]

ज्ञानवर्धक अंक

विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2012 वाला अंक पढ़ा। आमुख कथा 'इक्कीसवीं सदी में धान' में धान के बारे में काफी दिलचस्प व महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुईं। साथ ही धान की विभिन्न प्रजातियों के बारे में भी काफी अच्छी जानकारी प्राप्त हुई। देश में धान की पैदावार कहाँ-कहाँ व कितनी प्राप्त होती है, इसकी जानकारी भी मिली।

विशेष लेख 'लकड़ी ही लकड़ी' में खेती के साथ-साथ मेड़ पर विभिन्न प्रकार के पेड़ लगा कर किस प्रकार मोटा मुनाफा कमाया जा सकता है, इस बात को बताया गया है। खेतों की मेड़ पर और खाली पड़ी जमीन पर कौन-कौन से पेड़ लगाकर फायदा उगया जा सकता है इस बारे में काफी अच्छी जानकारी दी गई थी। अगर सभी किसान भाई अपने खेत की मेड़ों पर पेड़ लगाएं तो उन्हें फायदा तो होगा ही साथ ही पर्यावरण के लिए भी यह फायदेमंद होगा।

लेख, 'भूख की बात हाथ दर हाथ' व 'स्वस्थ, स्वच्छ तथा सुरक्षित भविष्य के लिये हरित रसायन' भी काफी अच्छे थे। विज्ञान समाचार व विज्ञान क्विज़ भी काफी अच्छे लगे!

श्री महेन्द्रप्रताप सिंह, ग्राम-मेहरागाँव, जिला-अल्मोड़ा - 263623 (उ.प्र.) [मो. : 09411618899]

अद्वितीय पत्रिका

विज्ञान प्रगति अपनी गुणवत्ता परक प्रकाशन यात्रा के गौरवशाली साठ साल पूरे करके विज्ञान जगत की अद्वितीय पत्रिका बन गयी है। जो पचास पैसा इसका शुरुआती मूल्य था आज देश के अधिकांश राज्यों में चलन से बाहर है। आज विज्ञान प्रगति थी चालीस गुनी कीमत होने के बाद भी यह 20 रू. में हाथों-हाथ बिक रही है। इसकी पृष्ठ सज्जा प्रस्तुति व पृष्ठों की आकर्षक क्वालिटी को देखते हुए इसका यह मूल्य भी कम ही लगता है। लेकिन छात्रों युवाओं और जिज्ञासुजनों के लिए यह कीमत ही ठीक है, क्योंकि मेरा मानना है कि इस पत्रिका का उद्देश्य अन्य बाजारू पत्रिकाओं की तरह मुनाफा कमाना न हो कर अच्छे विज्ञान परक सामाजिक वातावरण का सृजन करना है क्योंकि सर्वजन तक विज्ञान प्रगति को पहुंचाकर ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाया जा सकता है। विज्ञान की जानकारी के बिना ज्ञान और जीवन दोनों अधूरे हैं। रिसर्च सोसाइटी आफ होम्योपैथी के बस्ती जनपद का अध्यक्ष होने के नाते अक्सर देश के कोने-कोने में व्याख्यानमालाओं व शोधपरक कार्यक्रमों में जाना पड़ता है। यात्रा के समय में भी विज्ञान प्रगति मेरी ज्ञान यात्रा को अभिनव रूप में बढ़ाती रहती है। इसलिए मैं 'विज्ञान प्रगति' के प्रकाशन परिवार व सजग पाठकों का हृदय से आभारी हूँ।

डॉ. बी. के वर्मा, जिलाध्यक्ष, रिसर्च सोसाइटी आफ होम्योपैथी, एस. एम. होमियो हास्पिटल, गोटवा, पोस्ट - कटया, बाया कप्तानगंज, जिला - बस्ती, (उ.प्र.) [मो. : 09415163328; 09559669921]

सुहाना सफर

विज्ञान प्रगति पत्रिका के
प्रकाशन का सफर है सुहाना
इससे करोड़ों ने पाया
विज्ञान जगत का खजाना
बढ़ाया लोगों ने इससे
अपना ज्ञान भण्डार
कितनी करूँ प्रशंसा इसकी
इसकी खूबियां अपरम्पार
आया जब विज्ञान जगत में
जन कल्याणकारी बदलाव
गतिमान रही विज्ञान यात्रा
कभी लिया नहीं ठहराव
रंग रूप बहुत कुछ बदला
जमाने की तकनीक से
फिर भी पहचान बनी है इसकी
हटी कभी न लीक से
साठ बरस की हो गयी लेकिन
सबको लगती नयी नवेली
चाह नये अंकों की रहती
लगती है सबकी अलबेली
'पचास' पैसे का सिक्का नहीं
रहा चलन में आज
हो गयी 'बीस' रूपये की पत्रिका
'विज्ञान प्रगति' सबकी सरताज
छोटे-बड़े सभी इसे पढ़ते हैं
चाहत होती है सबकी एक
नयी-नयी जानकारियाँ ग्रहण कर
सब नॉलेज रखते 'अप टू डेट'
विज्ञान प्रगति इसी तरह से
बने पत्रिका जगत की सरताज
'कृष्ण कुमार' कर रहे कामना
यही प्रभु से आज।

श्री कृष्ण कुमार उपाध्याय, 8/262 बैरिहवा, गांधी नगर बस्ती, जिला - बस्ती-272001 (उ.प्र.) [मो. : 09236578935; 09839987104]